आपातकाल में सृजन फुलवारी

नीरू जैन 'निरूपमा'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

नीरु जैन निरुपमा

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-148-0

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण- 2020, नीरु जैन निरुपमा

मूल्य- 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY NEERU JAIN NIRUPAMA

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेंगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	प्रायश्चित का दीप	6
2.	जल संरक्षण	7
3.	पुष्प और प्रकृति	8
4.	सूरज मेरा बोले	9
5.	कोरोना एवं धरती मां	10
6.	कोरोना की तस्वीर	11
7.	पंछी और इंसान	12
8.	भूकम्प या हृदय कम्पन	13
9.	सूक्ष्म जीवाणु	14
10.	प्रकृति मां का श्रृंगार	15
11.	जिन्दगी का दृष्टिकोण	16
12.	उम्मीद का दामन	17
13.	मानवता	18
14.	वातावरण	19
15.	मां एवं प्रकृति मां	20
16.	सफलता की सीढ़ियां	21

प्रायश्चित का दीप

दीप जलाए मिल कर हम सबने,
रोग, शोक,अंधियारा दूर भगाने को,
भूल गए जलाना मन का दीपक,
अन्तर्मन का तम हटाने को,

गर हो गये तुम सकारात्मक तो,
अपने भाईयों की भी नकारात्मकता को दूर करो,
घुटी चीख़ों से विश्वव्याप्त नकारात्मकता को,
ओम की ध्वनि से नष्ट करो।

अपनाकर 'महावीर 'की वाणी गर मिटा देते मन से,
लोभ, मान, माया, मोह औ क्लेश,
तो आज हम भी दे देते दवा के साथ,
विश्व को अहिंसा और शांति का अचूक संदेश।

क्षमा, पश्चाताप की अग्नि व आंसूओं से,
पहले विश्व होम यज्ञ कराना होगा,
फिर ओंकार की ध्वनि कर,
धरती मां के सुर में अपना सुर मिलाना होगा।

जल संरक्षण

लेते नहीं हम सुध बुध अपनी,
धरती की नस रूपी नदियों की,
छोड़ देते गन्दे नाले व केमिकल इसलिए,
प्रकृति ने की खुद व्यवस्था
शीतल ताजे पानी की।

सोचो गर स्वार्थवश हमने,
इनमें कचरा ना मिलाया होता,
फ़िल्टर व बन्द प्लास्टिक का,
बासी पानी ना पीना पड़ता।

खत्म हुआ समय सोने का जागो,
देखो क्या है धरती मां का हाल,
अगर सफाई अभियान में,
साथ न दिया तो,
आने वाली नस्लें-फसलें
कैसे होगी खुशहाल।

पुष्प एवं प्रकृति

प्रात: भ्रमण के समय जब मैंने,
कुछ रंग-बिरंगे खिले अधमुस्काए पुष्पों को देखा,
बोली, अब तो अपने समूह में खुश हो ना तुम
मिट गई डाली पत्तों और जड़ से अलग होने की भय रेखा?

रोज तोड़ ले जाते मानव तुमको जबरन,
हेतू पूजन अर्चन।
अपने मन के भाव हो चाहे कलुषित,
पर तुम्हारा करते विसर्जन।

बोले निरुपमा, ये मोहवश तुमने,
क्या कह दिया वक्तव्य,
सुख दुख में सबके काम आना,
बस यही हमारा कर्तव्य।

अपनी मुस्कान औरों को देने में,
करते अपना जीवन अर्पण,
अपनी खुशबू से जग महकाकर,
करते तन मन समर्पण।

मैं अवाक्, निशब्द! समझती जिन्हें,
नवजात, कोमल शिशु अबोध,
पर प्रकृति ने खिलने से पहले ही
करा दिया था उन्हें कर्त्तव्य बोध।।

सूरज मेरा बोले

मनचला भानु लाया
हीरक किरणहार
अवनी को पहनाया

रंगी गज़रा लगा दूं
अगर दे अधिकार
स्नेह मेह बरसा दूं

पवन की बनी वीणा
मन मयूर नाचे
तन मन पुलकित कीना

घिरी घटा नभ गरजा
यूं बिजुरी चमकी
घुमड़ कर गगन बरसा

भू की भीगी पलकें
छिपा क्यूं सूरज
थी प्यासी अलकें

भू अधर कमल खोले
देख आ गई संध्या
सूरज मेरा बोले।

कोरोना एवं धरती मां

कहे कोरोना धरती मां से, बता अब तेरा कैसा है हाल।
तेरा दुख दर्द बस मैंने जाना, नहीं समझेंगे तेरे लाल,
कौन है तू और क्यूं तूने, अपने हाथ में लिया अख्तियार,
तेरी असह्य वेदना से जन्मा हूं मैं, कहे कोई नाजायज कोइ आविष्कार।
अपनी मां को सबकुछ माने, और सौदा तेरा करते फिरें,
क्या बीतती होगी तुझ पर, जब नाम पे तेरे कटे मरे।
समझ के अनपढ़ तुझे बच्चे तेरे, छोड़ चले जाते थे विदेश,
पर तू है ममता की मारी, मेरे डर से बुला लिया उनको स्वदेश।
चल के अनवरत चक्की सी, तू सबके लिए तू अन्न धन जुटाती है,
ढोकर ये दुनिया का बोझा, तेरी कमर झुकी सी जाती है।
तू देती अन्न, मीठे फल इनको, ये खाकर लेते नहीं डकार,
अन्न की तो बात ही छोड़ो, समान जीने का छीन लेते अधिकार।
कितनी मेहनत से तू पत्थर की, ठोकर खाकर लाती है जल,
पर पैसौ की खातिर, मिला देते उसमें कचरा और केमिकल।
कुछ दिन तो आराम तू कर ले, जब तक मैं हूँ तेरे साथ,
मेरे जाने के बाद कोई ना, पूछेगा फिर तेरा हाल।
देख लूंगा मैं उन सबको, जो तेरी छाती पर मूंग दलेगा,
तुझे न्याय दिलाने की खातिर, तेरे बच्चों से ही लड़ूंगा।
बोली मां हो जा तू शान्त, मेरा चाहे जो भी हो अन्जाम,
जो जैसा करता है करने दे, तू अपने सिर मत ले इल्जाम।
बनाकर वैक्सीन तेरे लाड़लो की खातिर, मेरी आवाज़ दबा दी जाएगी,
पर कहता हूं उस दिन तुझको, मेरी याद बहुत आएगी।
तुझे पता नहीं हैं इन्होंने, तेरी शैय्या के नीचे एटमबम लगाए हैं,
बड़ा बनाने को जिनको तूने,अपने सुख चैन गंवाए हैं।
कपूत ही फिक्र करता था मेरी, ये सोच के तू पछताएगी,
होकर गमगीन इक दिन तू, किसी पत्थर से सिर टकराएगी।

कोरोना की तस्वीर

रात जब देखी मैने सेटेलाइट से ली गई,
जगमग भारत की तस्वीर।
तो प्रथम दृष्ट्या दिख गई मुझको
डरे सहमे बच्चे जैसी कोरोना की तस्वीर।

वह अंधेरे से नहीं उजाले से डरता है,
मां भारती के चरणों में बैठा प्रश्न यही करता है।
तेरा बस क्यूं नहीं चलता इन्सानों पर,
जब अत्याचार करते है बेबस बेजुबानों पर।

तब तो तू चुप रहती है अब इन्सानों से पूछ।
मेरे पैदा होने मे क्या मेरा है कसूर।
आया था मैं ताज देखने सोचा तेरे लाड़लों को सबक सिखा दूं,
जो बुनते हैं मकड़जाल उनको उसमें ही फंसा दूं।

और ज़ूम की पिक्चर तो दिखा श्री मोदी जैसा शांतिदूत,
बोले अब तो शांत हो जाओ तुम मत मारो फूंक।
अपनी करनी वह भुगतेगा जो गलत करेगा काम,
खामख्वाह क्यूं लेते हो अपने सिर इल्जाम।

पहले मां अम्बै, राम और अब स्वयं महावीर,
हनुमान तुम्हें मनाने आए हैं,
गेहूं के साथ घुन ना पिस जाए बस यही बताने आए हैं।

पंछी और इंसान

सुर-ताल औ लय से रिक्त,
गूंजा तो है कलरव नभ में,
चहक नहीं, चीं-चीं की ध्वनि,
खोजते खग चक्षु,जनों को थल में।
लिए अवसादित मन मैंने प्रश्न किया तब,
क्यूं नहीं छेड़ी, आज कोयल तुमने मधुर तान,
जैसे तुम सब चहक-चहक के,
संग गाती थी मगंल, मधुर गान।
नन्हीं चिड़िया, सजल चक्षु बोली,
बस आपस में कर रहे थे बात,
इन्सानों के बिन, सब कुछ सूना,
पथ देख रहे वृक्ष,फूल औ पात।
कैसी हो तुम,मन तो खोलो,
क्यूं नहीं आ रहे बच्चे खेलने बाहर,
जन समूह ही ना सुने तो,
क्या हम गाऐं राग मल्हार।
मैं हतप्रभ, ठगे नयनों से बोली,
सुने थे बहुत, पशु वफ़ा, प्यार के किस्से,
पर क्या तुम नन्हें पंछी भी,
करते प्रेम हम इन्सानों से।
गर्वितमना बोली, सखी निरुपमा,
ना वक्त है ये जश्न का,
ना करनी याद दिलाने का,
आज कर्मफल भोग रहें हम,
कल पता नहीं ठिकाने का।।

भूकम्प या हृदय कम्पन

पूछा मैंने पृथ्वी मां से
कैसी हो?
क्यूं हुआ हृदय स्पन्दन?
रक्त चाप तो ठीक तुम्हारा?

बोली-
कुछ नहीं बस बिलखती मानवता,
को देख हुआ मनक्रन्दन।

कब से समझा रही थी उसको,
कभी गर्मी से कभी शीतलता से,

कई बार तो मैंने निरुपमा,
उसको ओले-आंधी,
तूफान की गड़गड़ाहट से भी डराया।

पर कैसे छोड़ूं रोती उसको, मां हूं ना,
हुआ दिल छलनी, गया मन का चैना।

मानव के जैसे और जीव भी मुझे उतने ही प्यारे हैं,
जो कर्मगति वंश पापों का बोझा ढो रहे सारे हैं।

छीन लिया जाता है जिनसे जीने का समान अधिकार,
मेरा क्या है मैंने तो दिया सब को समान अतुलित भंडार।

सूक्ष्म जीवाणु

स्वास्थ्य हेतु साफ सफाई जो पढ़ा था कभी,
एक सूक्ष्म जीवाणु ने वो महत्त्व सिखा दिया।

पर्यावरण संरक्षण की तालीम ली थी कभी,
उस सूक्ष्म जीवाणु ने वह पाठ पढ़ा दिया।

भारतीय संस्कृति को भूल जो करते थे मनमानी,
उसने छूने का भी डर उनके मन में बिठा दिया।

प्लास्टिक बंद पानी पीने में जो समझते हैं शान,
उनको शीतल पेय गंगा जल का महत्व बता दिया।

पाश्चात्य सभ्यता में रंगकर जो करते थे मनमानी,
बंद कर उनका मुंह घर का खाना खिला दिया।

बिना वजह वाहन चलाकर सड़कों पर जो करते थे जाम,
अब जरूरी काम में भी घर में बैठना सिखा दिया।

प्रकृति के साथ जो करता रहा हरदम छेड़छाड़,
उस धर्म संस्कृति का पाठ पढ़ना सिखा दिया।।

प्रकृति मां का श्रृंगार

मां वो चैत्र मास, सूरज मुखी सी तू
कहां वो सुगन्धित पुष्पहार।

वो हल्दिया साड़ी, वो मेंहदी पल्लू
वो अनुपम पुलकित श्रृंगार।

बोली किया तो है, सब कुछ तो है
पर अब है नहीं खुद पे एतबार।

मन में है घुटन तपन, नहीं हृदय प्रसन्न
आज अनूकूल नहीं प्रतिकूल बयार।

चहुंओर विषाद, जले बुझे चिराग
हर ओर फैले गम के अंधियार।

लगा सुरमई कजरा, इंद्रधनुषी गजरा
ले अपनी सुध उड़ा मन का गुबार।

तू है सम्पूर्ण, क्यूं अपरिपूर्ण
निरन्तर गतिशील, उपज अपरम्पार।

क्यूं मन पर अंकुश, तू बन निरंकुश
बन सृजक, कर प्रगति उन्नति लगातार।

हो स्वर्णिम प्रभात, प्रकाशमान गात
नई नस्लें फसलें कर रहीं इन्तजार।।

जिन्दगी का दृष्टिकोण

मन में पिरोकर खुशियों की कश्ती,
दरिया सुख दुख का आसानी से पार कर,
गर सामने हो मुश्किल तो क्या ग़म,
दिल में उम्मीद की किरण कायम कर।

सीखना होगा तरीका तैरने का,
गर तूफां से लड़ने का किया फैसला,
समझ लो वक्त की नजाकत को,
तभी बिखरने से बचेगा घोंसला।

हमेशा सही नहीं होते वे उसूल जो,
हमने सहूलियत के लिए बनाए,
बेहतर है चलते समय के साथ,
हम कारवां में कदमताल मिलाएं।

अगर खुद से हारे तो भला
क्या फायदा औरों से जीतकर
ले किसी गरीब की दुआ
दे मरहम उसके दर्द की दवा कर।

जीवन नैया में यदि कर दे अंधकार
ग़म, रोग, शोक, भूखमरी या दम्भ
आत्मविश्वास की रोशनी से ही,
दिखाई देगा, मन में प्रकाशस्तम्भ।।

उम्मीद का दामन

उम्मीद खटखटा रही है दरवाजा
आशाओं से भर लो आंचल
छाए है ग़म के बादल तो क्या
कल किरणों भर देंगी ये दामन।

कदम मंजिल की ओर बढ़ाओ
जीत का नहीं कुछ पता ठिकाना
नदी से आगे बढ़ना तुम सीखो
फिर तकदीर का देखो फ़साना।

मजबूत बना लो वजूद अपना
यूं ही नहीं मिल जाती पहचान
विचारों को मिले शब्दों का सहारा
तभी जागेगा आत्म सम्मान।

पहले बेस्वाद लगेंगे तेरे शब्द पर
उनमें होगा मीठी घुट्टी सा सदाचार
पढ़ने वाले की जुबां से उतरेंगे मन में
जिनमें झलकेगा तेरा व्यवहार।।

मानवता

वतन के लोगों देख लो,
किस तरह घुल रहा है,
राजा, प्रजा की चिन्ता में,
मंत्री, वैद्य, रक्षक कर्मचारियो ने
लगा दिये हैं दिन रात प्राण दांव पर अपने।

सफाई, सदाचार, सद्नीयत, औ भाईचारा,
सिखा रहा है जबरदस्ती कोई हमको,
संतों गुरुओं, मां और रब की वाणी को,
हमेशा हमने नकारा है।

बची मानवता को गर
जिंदा रखना हम सब चाहे,
तो राजा और तुम्हारा रब जो बोले,
उस को बच्चों की खातिर मानना ही होगा।

वातावरण

जिसे समझ रहे हम अदृश्य शत्रु
वह है हमारे मित्रों का मित्र,
जब हमने कद्र नहीं की वातावरण की
उसने समझा हमारे शत्रु को मनमीत।

नभ जल पृथ्वीकायिक जीवों की हिंसा
कर रहा आज सारा संसार,
पता नहीं भविष्य में क्या होगा बच्चों पर
इस केमिकल और धुएं का दुष्प्रभाव।

ए सी चलने से तो वातावरण का बढ़ जाता है तापमान,
पर्यावरण को स्वच्छ रखने में सभी को देना होगा योगदान।

हमें शत्रु को बल नहीं,
बुद्धि से हराना है,
आज हम ये दृढ़ संकल्प लें हम,
आजीवन वातावरण स्वच्छ बनाना है,

खत्म हुआ समय सोने का,
जागो उठकर देखो धरती मां का हाल,
अगर समय पर नहीं चेते तो
आने वाली नस्लें कैसे होगीं खुशहाल।

मां एवं प्रकृति मां

बीती गोधूलि बेला,
मां की बाट जोहता बेसब्र वत्स
'आती हूं' कह भटकती गौरेया,
दाने की तलाश

टूटा आशियां, छूटा साया
कह 'तू भर ला मटका'
जाने गई किस ठौर
प्राण हलक में अटका

अन्जान डगर, अंधेरे रास्ते, मन में चुभन
गर रोटी के बदले में चाहा
किसी ने कुछ
ताउम्र माफ ना कर पाएगा मुझे मेरा मन

मैं तेरा चांद, नहीं छोड़ूंगा तुझे अकेली
उधार की लिए किरण आस
मानवता तो जिंदा अभी
है मुझे अडिग विश्वास,

करता दृढ़ संकल्प,
रहूं रब की रज़ा में राजी
एक बार आजा,
मां प्रकृति पोषण देगी बाकी।।

सफलता की सीढ़ियां

हे युवा, गर तू देना चाहें, भविष्य को अप्रतिम रूप,
अतीत के आराम को भूल, चुन स्वर्णिम तप्त धूप।

कर मंगलमय मौन प्रार्थना, और सकारात्मक विचार,
निर्मल होंगे विचार, उनमें झलकेगा तेरा व्यवहार।

बना चक्र खुशी व आशा का, अपने चारों ओर,
एकत्रित कर सकारात्मक उर्जा, होकर भाव विभोर।

बहा कड़ी धूप में स्वेद, फिर ले शीतल छांव का सुख,
सफलता के स्वाद से पहले, सह विफलता का दुख।

विचार करतें हैं हम, लगा मन, दिमाग व आत्मा,
कि होगा वही जो,किस्मत में लिख दिया है परमात्मा।

पर जो तू करेगा उसका, तू खुद ही होगा ज़िम्मेदार,
शुरुआत ही ना करेगा, तो सफलता का कैसा हकदार।

भर खुद में उर्जा इतनी, चमके जग में तेरी तस्वीर,
सफल होना है तो बदल, खुद ही अपनी तकदीर।

दुख में टूटने ना दे खुद को, कीर्तिमान तोड़ दे,
पार करना है समंदर,तो किनारे का मोह छोड़ दें।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

प्रकृति ने इंसान को वह अलौकिक शक्ति प्रदान की है वह अपने मनोबल से चारों ओर फैली नकारात्मक ऊर्जा को सकारात्मक शक्ति में परिवर्तित कर सकता है। आज के दौर में हमें नियमों का पालन करते हुए अपने बुद्धिबल से रचनात्मक कार्यों की ओर अग्रसर होना होगा। जैसे प्रकृति की सृजन शक्ति से यह सृष्टि बनी है ऐसे ही हम अगर अपने में सृजन शक्ति का विकास करें तो यह प्रकृति जैसी अमूल्य धरोहर को कायम रखने में सहायक कदम सिद्ध होगा, बशर्ते कि आजकल की पीढ़ी का हिंदी साहित्य को पढ़ने में विश्वास हो।

यह जो सर्वविदित आपातकाल चल रहा है इसमें सामाजिक वातावरण को सकारात्मक दृष्टिकोण देने हेतु एवं स्वयं के प्रति रचनात्मक जागरूकता आवश्यक है। भय और चिंता को छोड़कर बच्चों एवं बड़ों के दृष्टिकोण सकारात्मक बदलाव लाना होगा।

विचारों से ही शब्दों की उत्पत्ति होती है और शब्दों से ही रचनाकार के व्यवहार का पता चलता है।सकारात्मक दृष्टिकोण से ही जीवन सुखमय बनाया जा सकता है। आज नीरसता से बचने हेतु हमें अच्छा साहित्य लिखना ही नहीं बल्कि पढ़ना व समझना भी बेहद जरूरी है।

अंतरा शब्द शक्ति ने हमें अपने सकारात्मक विचार कविताओं के माध्यम से रखने के लिए एक मजबूत आधार प्रदान किया है। श्रीमती प्रीति सुराना जी के सार्थक प्रयासों से अंतरा शब्दशक्ति ने लगातार सृजन जारी रखने के लिए सबको सृजन से जोड़े रखा।

धन्यवाद!

रचनाकार

नीरू जैन 'निरूपमा'

Email- njneerujain2001@gmail.com
Mobile - 7017599334

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला - बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क - 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-148-0

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/